विद्युत दर्पण

पक्षेविसमिति हिन्दी दिवस विशेषांक

वर्ष 2007-2008

अंक-5 अक्तूबर 2007

सम्पादकीय

हाल ही में हमने हिन्दी दिवस मनाया । भारतवर्ष ही नहीं, दुनिया में जहाँ-जहाँ भारतीय हैं, हिन्दी दिवस मनाया जाता है । हमारी संविधान सभा ने, भारत देश के संविधान-निर्माण की प्रकिया के समय, 14 सितम्बर 1949 को भारत संघ की राजभाषा से संबंधित धाराओं को पारित किया था और उन्हीं के अन्तर्गत देवनागरी लिपि वाली हिन्दी को भारत के संघ की राजभाषा घोषित किया था । हमारा समस्त स्वाधीनता संग्राम हिन्दी में ही लड़ा गया । देश की स्वाधीनता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले आपस में इसी जनभाषा में विचारों का आदान-प्रदान करते थे । हमारे स्वाधीनता संग्राम के अनन्य सेनानी महात्मा गांधी अपने विचार अपने देशवासियों के सामने हिन्दी में ही रखते थे । उस समय संचार के साधन आज के समान विकसित नहीं थे । रेडियो और दूरदर्शन की तो बात ही क्या भारत में समाचार पत्र भी अपनी विकासशील अवस्था में ही थे । ऐसे में देश के विभिन्न आंचलों में बोली जाने वाली भाषाएँ एक दूसरे के सम्पर्क में कैसे आतीं । यही स्थिति हिन्दी की भी थी । किन्तु देशवासियों की संकल्पशक्ति और दृढ़निश्चय की बानगी देखिए कि महात्मा गांधी के विचारों को दुभाषिये के बिना समझने के लिए मद्रास में 1920 में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारिणी सभा नामक हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने वाली पहली स्वयंसेवी संस्था की स्थापना हुई । उसके बाद आसाम में ऐसे संगठन का उदय हुआ । उसके बाद तो देश के कोने-कोने में ऐसी स्वयं सेवी संस्थाएँ तेजी से विकसित होने लगी, देश के लोग परस्पर तेजी से जुड़ते गए और स्वाधीनता संग्राम के रथ को अपेक्षित गति मिलती गई । 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ । अब स्वतंत्र देश के विकास और इसे एक बार पुन: विश्व गुरू और सोने की चिड़िया जैसे गौरवशाली स्थान पर बैठाने की दुर्घर्ष चुनौती थी । संविधान निर्माताओं ने इसे भी स्वीकार किया और देश के सर्वांगीण विकास और इस विकास का प्रकाश देश के कण-कण तक पहुँचाने के लिए भारत के संघ की राजभाषा उसी हिन्दी को बनाया जो देश के स्वाधीनता संग्राम और स्वाभिमान की भाषा थी । हममें से अनेक लोग उस युग में भले ही न जन्मे हों किन्तु उस युग की विरासत के वारिस तो अवश्य हैं और उस विरासत में हमें देश को विश्व गुरू और सोने की चिड़िया जैसे गौरवपूर्ण स्थान पर बैठाने की चुनौती भी मिली है । आइए उस चुनौती को स्वीकारें और उसका समुचित उत्तर दें ।

शुभकामनाओं सहित ।

प्रवीण भाई पटेल
सदस्य सचिव

पक्षेविसमिति में राजभाषा

हिन्दी पखवाड़ा 2007

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, मुंबई में दिनांक 1 सितम्बर 2007 से 14 सितम्बर 2007 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया । इस अवधि में कुल 12 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी । कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी, चाहे वे तकनीकी कार्य करते हों या प्रशासनिक, इन प्रतियोगिताओं में भाग ले सकें, इस प्रकार प्रतियोगिताओं की रूपरेखा बनाई गई थी । इनमें ''ग'' वर्ग के अधिकारी / कर्मचारी एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए विशेष प्रावधान रखे गये ।

कार्यालय के कुल 42 कार्मिकों में से 32 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में सोत्साह भाग लिया । अन्य अधिकारियों का निर्णायक आदि के रूप में सहभाग रहा । अधिकतर कार्मिकों ने एक से अधिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया ।

दिनांक 12 सितम्बर 2007 को परिसंवाद के स्वरूप की एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 12 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

दिनांक 14 सितम्बर 2007 को हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया । इस अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने स्वरचित कविताएँ, चुटकुले एवं गीत प्रस्तुत किए । महाराष्ट्र में श्री गणेशजी के उत्सव का आरम्भ हो रहा था इसलिए ''गणपति बप्पा मोरया' । यह संकल्पना भी कार्यक्रम में रखी गई थी ।

हिन्दी पखवाड़ा 2007
01.09.2007 से 14.09.2007
स्पर्धा और विजेता

कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण-

प्रथम- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्री मोरेश्वर एम. धकाते, कार्य. अभि.
तृतीय- श्रीमती ऋता रमेश राणे, उ.श्रे.लि.

हिन्दी वाचन-

प्रथम- श्री सु.द. टाकसांडे, अधी. अभि.
द्वितीय- श्रीमती छाया अ. सागरे, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती आरती अ.देशमुख, अ.श्रे.लि.

हिन्दी भाषण- (क + ख वर्ग)

प्रथम- श्री दयानन्द सिंह, कार्य.अभि.
द्वितीय- श्री बी.आर.जोशी, कार्य.अभि.
तृतीय- श्री सु.द. टाकसांडे, अधी.अभि.

हिन्दी भाषण- (ग वर्ग)

प्रथम- श्री एस. सत्यनारायण, कार्य.अभि.
द्वितीय- श्री सुकुमार हानरा, सहा.अभि.
तृतीय- श्रीमती मुनीरा शेख, अ.श्रे.लि.

हिन्दी श्रुतलेख-

प्रथम- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्रीमती सुमेधा . राजाध्यक्ष, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती आरती अ. देशमुख, अ.श्रे.लि.

हिन्दी निबंध- (क+ख वर्ग)-

प्रथम- श्री मोरेश्वर एम.धकाते, कार्य.अभि.
द्वितीय- श्री शिवकुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक श्रे.-III
तृतीय- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती आरती अ.देशमुख, अ.श्रे.लि.

हिन्दी निबंध (ग वर्ग)-

प्रथम- शोभना पणिकर, आशुलिपिक श्रे.-II
द्वितीय- श्री एस. सत्यनारायण, कार्य.अभि.
तृतीय- श्री सुकुमार हानरा, सहा.अभि.

हिन्दी टिप्पण-आलेखन

प्रथम- श्री शिवकुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक श्रे.-III
द्वितीय- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्री मोरेश्वर एम. धकाते, कार्य.अभि.

हिन्दी वाचन -(चतुर्थ श्रेणी)

प्रथम- श्री एम.डी.सावंत, चपरासी
द्वितीय- श्री आर.एन. भोरकड़े, सफाई वाला
तृतीय- श्री एम.बी. शेलार, दफ्तरी

हिन्दी में आवेदन लिखना- (चतुर्थ श्रेणी)

प्रथम- श्री आर.एन. भोरकड़े, सफाई वाला
द्वितीय- श्री एम.बी. शेलार, दफ्तरी
तृतीय- श्री बी.एन. जाधव, मददगार

हिन्दी व्यवहार- (हस्तलिखित)

प्रथम- श्रीमती ऋता रमेश राणे, उ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्रीमती शुभांगी कोल्हे, उ.श्रे.लि.
तृतीय- श्री मदन गोपाल गुप्ता, कार्य.अभि.

हिन्दी व्यवहार (कम्प्यूटर पर)

प्रथम- श्रीमती ऋता रमेश राणे, उ.श्रे.लि.
द्वितीय- श्रीमती मुनीरा ए. शेख, अ.श्रे.लि.
तृतीय- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि.

मानसिकता

वो पनघट, वो बँसवारी, वो सरसो के फूल, वो धान की क्यारी ।
वो अमवा के बौर, वो सनई की लट, कहाँ से लायें, वो झा जी की लारी ।
झा जी की लारी, उसकी कहानी भी न्यारी
आज रमई काका के पास पैसा नहीं, उनको भी चढ़ाना है ।
कल दुधिया के दुल्हन को डॉक्टर के पास भी पहुँचाना है ।
परमेश्वर भैया के केस की कल तारिख पड़ी है, उन्हें भी देखना है ।
पूरे गाँव के दु:ख में साथ देना, पर बस भी चलाना है ।
बस चलाते-चलाते,
झा जी रमई काका बन गये, लारी बन्द हो गई ।
अब झा जी सोचने लगे ,
कैसे जायें शहर, कैसे करें दवाई , बिटिया भी बीमार है ।
बेटवा को पढ़ाना है, शहर में नाम भी लिखाना है ।
बस नहीं है, तो क्या हुआ, जैसे भी हो शहर तो पहुँचाना है ।
बस क्या था, लारी बेंचा, टेम्पू खरीदा,
पैसा कमाया, अपना भी काम किया ।
बिटिया का इलाज भी कराया, बेटवा को भी पढ़ाया ।
बेटवा की पढ़ाई रंग लाया, मल्टीनशनल में नौकरी पाया ।
समय बदला -
आज झा जी के पास लारी नहीं, शेवरलेट है ।
आँगन में तुलसी के बिरवा नहीं, पर इन्टरनेट है ।
रमई काका को जानते नहीं, दुधिया को पहचानते नहीं ।
होली, दिवाली तो दूर, रामनवमी भी जानते नहीं ।
हाँ ! फ्रेंड शिप डे भूलते नहीं वैलिन्टाइन डे बिसराते नहीं ।
भगत-गाँधी, भूल गये, पर! राखी सावंत, मल्लिका संग थिरकते थकते नहीं ।
क्या ये वही झा जी हैं, हाँ वही झा जी हैं ।
कुछ नहीं बदला, सब कुछ वही है ।
वही पनघट, वही बँसवारी,
वही सरसों के फूल, वही धान की क्यारी ।
वही अमवा के बौर, वही सनई की लट,
बस नहीं है तो क्या नहीं है, झा जी की लारी ।

प्रस्तुतकर्त्ता - दयानन्द सिंह,
कार्यपालक अभियंता (वा.II)

પ્રધાન થઈ ગયાં

ગુજરાતી કવિતા-

રાવણના હતાં લક્ષણોં ને રામ થઈ ગયાં ।
દાનવ બધા આ યુગ મહિ ભગવાન થઈ ગયાં ॥

મારી ગલીનાં નામચીં શાણા હતાં કાલે ।
આજે સવારે એ બધા પ્રધાન થઈ ગયાં ॥

સુનામી અને ભકપંમા તો કંઇજ ના થયું ।
ખુરશી જરાં હલી અને બેમાન થઈ ગયાં ॥

કહો હવે કોના પર હું ભરોસો મુકૂં દોસ્ત ।
રક્ષકો જ ખુદ અહીં ભક્ષકો થઈ ગયાં ॥

મારી કવિતા આજ ક્યાંય છપાતી નથી ને ।
મોદી રચિત કાવ્યોના સન્માન થઈ ગયા ॥

- રાજ ભાસ્કર
(Web Dunia से साभार)

मंत्री बन गये

हिन्दी रूपान्तर

रावण के थे गुण सभी, पर राम बन गये
दानव सभी इस युग में, भगवान बन गये ।

मेरी गली में कल तक जिनसे थर्राते थे लोग
आज सुबह वे सभी मंत्री बन गये ।

सुनामी और भूकंप का तो कुछ असर न था
कुर्सी जरा हिली और बेहोश हो गये ।

किस पर कहो अब मैं यकीं करूँ ऐ दोस्त
रक्षक ही सब जो खुद ही भक्षक बन गये ।

मेरी कविता तो आज तक छपी नहीं कहीं
उनके रचे काव्यों का सम्मान हो गया ।

कवि - राज भास्कर
हिन्दी रूपान्तर- प्रवीण भाई पटेल

अहं और सांई

किसी ट्रक के पीछे लिखा था, ''ना तू अधूरा है, ना अभागा । बात इतनीसी है कि ना तू जागा है । कितनी गहन पंक्ति है । सुख प्राप्ति के प्रयास में हमें कुछ अनुभव प्राप्त होते हैं । हार जीत होती है और हम खुद को हीन, तुच्छ या सर्वश्रेष्ठ मानने लगते हैं । जिनका सुख प्राप्ति में सहयोग हुआ था अपने हो गए, बाकि सब पराये हैं ।

ऐसे ही, मैं और मेरा के विशाल भ्रमजाल में हम खो जाते हैं । अपना विशाल रूप, भगवान स्वरूप लुप्त हो जाता है । इस संदर्भ में कबीर का दोहा याद आता है, जैसे तिल में तेल है, ज्यों चकमक में आग। तेरा सांई तुझमें है, जाग सके तो जाग ।। यह सब समझ का फेरा है । जैसे प्याज की एक-एक परत खोल दी जाये तो अंत में बाकी कुछ नही बचता है । वैसे ही अहं की एक-एक परत को त्यागने से वह निराकार स्वरूप प्राप्त होता है । बस अहं को त्यागने भर की बात है । हम जैसे आग को छूते नहीं, सांप के नजदीक भी जाते नहीं, जहर पीते नहीं, क्योंकि हम जानते हैं कि इनका संग बुरा होता है । वैसे ही अहं का जहरीलापन अगर समझ में आए तो आप उससे दूर रहने लगेंगे । आपको पूजा पाठ, ध्यान, जप-तप किसी भी उपक्रम की कोई जरूरत नहीं बस आपके जागने भर की देर है, आपका सांई आपके पास है, आपके भीतर है ।

तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा

ईश्वर की स्तुति में उपरोक्त पंक्ति बोली जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ है कि मैं तुझको जो कुछ अर्पण कर रहा हूँ, वह सब तेरा ही दिया हुआ है । मैं तो तेरा दिया हुआ ही तुझको सौंप रहा हूँ, इसमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है । यही वह स्थिति है जब मनुष्य अहं मुक्त होता है ।

छोटी-सी भी उपलब्धि प्राप्त होने पर मनुष्य उसका श्रेय स्वयं को देने लगता है । उपलब्धियों की संख्या बढ़ने के साथ स्वयं को उनका श्रेय देने की मात्रा बढ़ने लगती है । एक स्थिति ऐसे आती है कि मनुष्य स्वयं को ''सैल्फ मैड'' (Selfmade) कहने लगता है । यह मनुष्य में अहं आ जाने के संकेत हैं । फिर वह शेष समाज से अपनी तुलना करने लगता है, स्वयं को श्रेष्ठ अन्य को हीन मानने लगता है । वह दान-पुण्य करता है तो अपने नाम से उसका प्रचार करवाता है । कुछ स्थानों पर वह अपने दान-पुण्य के बदले विशेष व्यवहार मांगता है । इसके विपरीत ईश्वर में विश्वास रखने वाले लोग अपनी प्रत्येक उपलब्धि के के लिए ईश्वर को श्रेय देते हुए उसका धन्यवाद करते हैं । उन्हें जहाँ भी लगता है, समाज हित में अपनी उपलब्धियाँ यह सोचते और कहते हुए अर्जित कर देते हैं कि तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मोरा ।''

विंडोज् ! एक नयी दुनियाँ

[मेरा दोस्त मोटू कम्प्यूटर के बारे में बहुत कुछ जानता है । उसका एक दोस्त है, छोटू । छोटू अच्छा इन्सान है, लेकिन कम्प्यूटर की जानकारी के मामले में छोड़ा पीछे ही है । कल वे दोनों आपस में बातें कर रहे थे । माफ करना, मैंने उनकी बातें चुपके से सुनली और आपको बता रहा हूँ ।]

मोटू:ए छोटू । जीवन में कितना बदलाव आता रहता है ना! क्या तुमने 1992 में PC (पीसी) पर काम किया है ?

छोटू:जी हाँ, मैं अब भी पीसी पर काम करता हूँ । पर मुझे उसमें कोई परिवर्तन नज़र नहीं आया । पीसी तो पीसी ही है ।

मोटू:1992 में जब तुम पीसी पर काम करते थे, मान लो Word Star (वर्ड स्टार) पर । तब अगर तुम्हारे सीनियर आकर कहते कि 5 मिनट के लिए पीसी चाहिए तब तुम क्या करते ?

छोटू:तो करना क्या था ? मैं अपना काम सेव करता और पीसी दे देता ।

मोटू:ऐसा तुम्हें इसलिए करना पड़ता था क्योंकि तब पीसी DOS (डॉस) पर चलते थे । तुम एक समय में एक ही काम कर सकते थे ।

छोटू:तो इसमें अब क्या परिवर्तन आया है ?

मोटू:अब तुम्हें अपना काम बंद करने की जरूरत नहीं है । तुम अपने सीनियर की फाईल खोलकर किसी पेज़ का प्रिंट लेना आदि काम कर सकते हो और साथ-साथ अपना काम भी जारी रख सकते हो ।

छोटू:हाँ! हाँ! मैं कम्प्यूटर पर गाने सुनता हूँ, वर्ड में पेज प्रिंट करता हूँ । अपने मेल देखता हूँ, उसी समय दूसरी अनेक साइटस् देखता हूँ ।

मोटू:यह सब '' WINDOWS'' (''विंडोज्'') के कारण हो पाता है, न कि डॉस की वजह से ।

छोटू:ए, ये ''डॉस'' ''विंडोज्'' बड़े-बड़े शब्द क्या हैं ? मैं हमेशा से पीसी के बारे में सब कुछ जानना चाहता था । यह ''डॉस'' क्या है ?

मोटू:ओ एस का अर्थ है - Operating System (ऑपरेटिंग सिस्टम) । पहले यह डॉस अर्थात डिस्क ऑपरेशन सिस्टम थी । अब यह ''विंडोज् ओ एस '' है ।

छोटू:पहले तो, यह बताओ, कि यह ओ एस क्या है ?

मोटू:जैसे ही तुम पीसी शुरू करते हो, तुम्हें पीसी रेडी होने तक रूकना पड़ता है ।

छोटू:क्रिकेट में भी जब तक बल्लेबाज तैयार नहीं होता, तब तक मैच शुरू नहीं किया जा सकता ।

मोटू:बिल्कुल सही । अगर तुमने ध्यान दिया हो तो, जब तुम पीसी ऑन करते हो, तब तुमने देखा होगा कि आपके की बोर्ड की लाईट एक पल के लिए जलती है । - वैसे ही माउस यदि उसमें लाईट हो तो, सी डी ड्राइव आदि की लाईट जलती है । कम्प्यूटर पहले ओ एस नामका प्रोग्राम शुरू करता है । अगर पीसी को कार्यरत करना हो तो यह मुख्य प्रोग्राम ठीक तरह से लोड किया होना जरूरी है । एक बार यह प्रोग्रॉम ठीक तरह से लोड किया जाए तब और तब ही आपका पीसी काम कर सकेगा ।

छोटू:उस दिन मेरे बाजू के पीसी में कुछ प्रॉब्लम आयी थी । कम्प्यूटर मेकानिक एफ -1 अथवा एफ-2 जैसी Keys (कीज़) दबा रहा था ।

उसने कहा पीसी को फार्मेट करो । क्या इसका मतलब यह है कि पीसी उसका ओएस लोड नहीं कर पा रहा था ।

मोटू:जब कभी आपका पीसी अपना ओएस लोड नहीं कर पा रहे हो, तब कुछ भी करके आपको ओएस लोड करवाना होगा या तो सीडी से या फिर इन पीसी के सॉफ्टवेर रिपेयर विज़ार्ड से रिपेयर करके । इससे भी न हो सके तो आपके पीसी पर फॉर्मेटिंग करके दुबारा संपूर्ण लोड करना होगा ।

छोटू:यह तो ठीक है, पर ओएस क्या करता है ?

मोटू:सबसे पहले तो ओएस यह देखता है कि की बोर्ड, माउस आदि जैसी चीज़ें लोडेड हैं । उसके बाद जब आप कोई प्रोग्राम पर क्लिक करते हो, जैसे कि वर्ड या एक्सेल, तब ओएस इस बात को सुनिश्चित कर लेता है कि यह प्रोग्राम लोड किए गए हैं ।

छोटू:अच्छा, मुझे वर्ड पर काम करना हो तब !

मोटू:तुम कई तरीकों से यह कर सकते हो । या तो आप अपने पीसी को डेस्कटॉप आयकॉन पर डब्ल्यू पर क्लिक करो या फिर ''स्टार्ट'' प्रोग्राम पर जाकर ''वर्ड'' पर क्लिक करो अथवा तुम ''एक्सप्लोरर'' पर जाकर msword.exe (एमएसवर्ड. एक्स) फाईल ढूंढकर उस पर क्लिक करें ।

छोटू:कम्प्यूटर कैसे जानता है ?

मोटू:माउस बटन क्लिक करते ही ओ एस जान जायेगा । उसे यह भी मालूम होगा कि ''डब्ल्यू'' मतलब उसे क्या करना है । अंतर्गत रूप से किसी ने (प्रोग्रामिंग द्वारा) कम्प्यूटर को बताया कि ''डब्ल्यू'' आयकॉन क्लिक होने पर msword.exe प्रोग्राम शुरू किया जाये ।

छोटू:ओह ! मुझे लगा यह कोई जादू है ।

मोटू:यह जादू नहीं, यह मशीन है । विंडोज् मेमोरी में कुछ जगह बनायेगा और msword.exe लोड करेगा और शुरू कर देगा ।

छोटू:तो क्या फाईल, पेज़ ओएस से आते हैं ?

मोटू:नहीं । जब वर्ड कार्यरत होता है, तो उसके शुरू होता है तब उसके शुरू के पृष्ठ से फाईल, एडिट, व्हयू, टूल्स आदि बहुत से मेन्यू होते हैं । वर्ड विंडोज् ओएस से कहता है '' ये, विंडोज् ओएस प्लीज़ नीला आयत बना दो, ग्रे रंग का मेनू बार लाओ, उसे फाईल, टूल्स, एडिट आदि जैसे शीर्षक दो और ओएस जब यह सब कुछ करता है तब आपको स्क्रिन दिखती है ।

छोटू:ओह ! यह तो काफी दिलचस्प है । इसके बाद क्या ?

मोटू:यदि आप कर्सर ''फाईल'' पर लाकर ''न्यू'' दबाते हो, तब ओएस यह वर्ड को बताता है, जैसे कि ''ए वर्ड, माउस ने न्यू फाईल सिलेक्ट की है । फिर वर्ड को पता है कि उसे कैसे संभाला जाए । वह ओएस से कहेगा कि एक सफेद पृष्ठ तैयार करे और स्टार्ट पर कर्सर रखे । उसके बाद जैसे-जैसे आप की बोर्ड पर शब्द टाइप करेंगे, वैसे-वैसे वर्ड द्वारा दिए गए निर्देशानुसार ओ एस उन्हें स्क्रिन पर लायेगा । उसी प्रकार यहि आप फाईल सेव करने के लिए कहोगे तो, ओएस के पास सेविंग पर वर्ड द्वारा दिए गए निर्देश होते हैं और जब आप ''क्विट'' भी करते हो तब आप, कम्प्यूटर और प्रोग्राम के बीच ओएस ही निर्देशों के आदान-प्रदान का मुख्य माध्यम होता है । मेमोरी, मैनेजमेंट, रिसोर्स मैनेजमेंट जैसे कार्य ओएस के अधीन होते हैं । पहले यदि प्रिंटर पर कुछ प्रिंट करना चाहते थे तो वर्ड जैसे प्रोग्राम में ड्राइवर्स होना आवश्यक था । अब यह सारा काम ओएस करता है । अत: सॉफ्टवेयर के निर्माता सिर्फ अपना प्रोग्राम बनाते हैं । वह कैसे प्रिंट होगा, इसकी जिम्मेदारी वर्डस् पर होती है । डॉस के विषय में यह सबसे बड़ा परिवर्तन है ।

छोटू:वाह । तो आज मैंने काफी जानकारी प्राप्त की । हम ऐसे ही बातचीत करते रहेंगे । क्या तुम मुझे कम्प्यूटर की अंतर्गत कथा के बारे में और कुछ बताओगे ?

मोटू:जरूर । क्यों नहीं । यदि तुम्हें दिलचस्पी हो तो बस मुझे बता दो । मुझे जितनी जानकारी होगी, मैं तुम्हें जरूर बताऊँगा ।

[मुझे उनकी यह बातचीत पसंद आयी । यदि आप चाहते हैं कि मोटू आपके सीधे-साधे प्रश्नों के उत्तर दें, तो आप मुझसे कहिए - मैं उसे जानता हूँ ।]

-एस. सत्यनारायण, कार्यपालक अभियंता

ये ताज

ताज तेरा रूप अनोखा है ।
धवल रंग मन को लुभाया है ।
शहाँजहाँ मुमताज की कहानी है ।
ताज एक प्रेम की निशानी है ।।
पूनम की चाँदनी रात में ।
प्रतिबिंब तेरा पड़ता है ।
जमुना का सारा पानी ।
प्रेम दिवाना हो जाता है ।।
ताज भारत की शान है ।
ताज दो दिलों की फरियाद है ।
ताज प्रेम का गीत है ।
ताज दो दिलों की आवाज़ है ।।
ताज तू एक अमर कहानी है ।
सारे जगत के प्रेमियों की ।
तू अमर निशानी है ।
प्रीत-प्यार की निशानी है ।।

-अनिल बा. सागरे

चुटकुले

सुनील और अनिल दो मित्र हैं । सुनील ने पुरानी कार खरीद ली । अनिल बोला यार सुनील तुम्हारी कार द्वारा घुमाके तो ले आओ । सुनील ने अनिल को कार से घुमाया । सुनील बोला, बोलो यार कैसी है मेरी कार । अनिल बोला कार तो अच्छी है । लेकिन यार हॉर्न छोड़के सभी की आवाज आता है ।

..

लोकल गाड़ी में दो आदमी सफर कर रहे थे । लोकल खचाखच भरी हुई थी । दोनों जोर से बातें कर रहे थे । दोनों आमने सामने बैठे हुए थे । एक बोला यार तुम किधर रहते हो । दूसरा बोला ----रोड - हाँ यार मैं भी वहीं रहता हूँ । पहला बोला - तुम्हारी सोसायटी का नाम क्या है ? दूसरा बोला - नव शिवम् । पहला बोला - अरे यार मैं भी उधर ही रहता हूँ । पब्लिक दोनों की बातें सुन रही थी । पहला बोला अरे यार तुम्हारा रूम नम्बर कितना है ? दूसरा बोला मैं 20 नम्बर में रहता हूँ । तो पहले दोस्त ने बोला अरे यार क्या बात है । मैं भी 20 नम्बर में रहता हूँ । तो बाजू में बैठा हुआ आदमी बोला । अरे यार दोनों एक घर में रहते हो --- क्या बाते बनाते हो । तो दोनों झट से बोले अरे यार- अरे भाई शांति से बैठे रहो । हम लोग तो खाली टाइम पास कर रहे हैं ।

* * * * *